International Journal of Research in Social Sciences and Humanities http://www.ijrssh.com

(IJRSSH) 2014, Vol. No. 4, Issue No. II, Apr-Jun **e-ISSN: 2249-4642, p-ISSN: 2454-4671**

Nature and Poetry of 'Pant'

Dr. (Smt.) Ranjana Kulshreshtha

Associate Professor & HOD (Hindi), Th. Biri Singh College, Tundla, Firozabad

प्रकृति और पन्त का काव्य

डॉ० (श्रीमती) रंजना कुलश्रेष्ठ

एसोसियेट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष (हिन्दी) ठा० बीरी सिंह महाविद्यालय टूण्डला फिरोजाबाद

प्राचीन काल से ही प्रकृति और पर्यावरण का अटूट सम्बन्ध है। प्रकृति की सुरक्षा के लिए हमारी संस्कृति में अनेक प्रयास किये गये सामन्य जन को प्रकृति से जोडे रखने के लिए, उसकी रक्षा, पूजन, विधान, संस्कार आदि को धर्म से जोड़ा गया। गौ एवं अन्य जानवरों का पूजन वंश के लिए तथा विभिन्न नदियों, पेडों, पर्वत का पूजन उसकी सुरक्षा और उसका अस्तित्व को बनाने के लिए अति आवश्यक है। प्रकृति एवं साहित्य में भी अटूट संम्बन्ध है, विश्व का कोई भी साहित्य प्रकृति चित्रण के बिना अधूरा है। इसका कारण यह भी है कि मानव जीवन की कहानी का प्रारम्भ प्रकृति से शुरु होता है। पूर्व पाषण युग, नव पाषण युग, इसी कहानी को दौहराते है। प्रकृति की महिमामयी गाथा को कवि, निबन्धकार और कहानीकार अपने नायक एवं नायिका के माध्यम से पाठक तक पहुचांने का कार्य करते है। लेकिन जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया, व्यक्ति की सोच परिष्कृत होती गयी । सांसरिकता में लिप्त मानव ने अपने पूरी ताकत धनोपार्जन और भौतिक सुख-साधनों को जुटाने में लगा दी है। उसकी विचार धारा, सोच, अभिवृत्ति, आस्था और भावों में परिवर्तन होता चला गया और वह धीरे-धीरे स्वार्थी होता गया। प्रकृति का क्षरण होता चला गया, जिसके परिणाम स्वरुप अब उसका प्रकृति एवं नैसर्गिक तत्वों जैसे नदी, नाले, पहाड, झरने, सरोवर, पुष्पलता, पेड-पौधों, इत्यादि से कोई सरोकर न्यून नहीं रहा। दुनिया में वह एक अजनवी की तरह जीवन यापन कर रहा है। यह स्थिति बहुत ही चिन्तनीय और दयनीय है। इसको हम मानव का सौभाग्य कहे या दुर्भाग्य, वरदान है या अभिशाप। जबकि इस स्थिति के जिम्मेदार हम ही हैं, हमने स्वार्थ वस स्वयं का विकास एवं प्रगति करने के लिए प्रकृति के साथ खिलवाड किया

है। उसको प्रदूषित किया है। जिसका प्रभाव हमारे जीवन में स्प्षट परिलक्षित होता है। आज व्यक्ति के जीवन में विभिन्न गम्भीर बीमारियां, प्राकृतिक आपदा जलवायु परिवर्तन आदि के रूप में परिलक्षित होती है।

प्रस्तुत आलेख का सम्बन्ध पृष्टभूमि समस्त विश्व है, इसमें हिन्दी एवं अंग्रेजी के कवियों का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है। हिन्दी साहित्य में समय समय पर अनेकानेक महान विभूतियाँ अवतरित हुई, जिन्होंने प्रकृति की गोद में बैठकर अपना अमूल्य योगदान दिया जिनके पदचाप, पैरों की आहट आज भी हमें स्पष्ट रूप से सुनाई देती है। हिन्दी साहित्य में पन्त छायावादी काव्यधारा के मुख्य स्तम्भ के रुप में हमारे समक्ष विशिष्ट कवि के रुप में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते है। छायावादी काव्यधारा को एक नई दिशा नई गति देने में पन्त जी की भूमिका उल्लेखनीय है।

प्रकृति के सुकुमार चितेरे कवि के उद्गार इस रुप में व्यक्त होते है—

सुन्दर है विहग सुमन सुंदर ।
मानव तुम सबसे सुन्दरतम्।।

प्राकृतिक दृश्यों में पन्त जी का मन अधिक रमता है, प्रकृति उनकी सहचरी है। जहां सौन्दर्य बिखरा है, उसका साहचर्य कवि के स्मृति पटल पर अभिस्मरणीय स्थान बना चुका है। एक साधारण से फूल भी उन्हें प्रभावित करता है, और उनका प्रेरणा श्रौत बन जाता है। पन्त जी स्वयं लिखते हैं— "कविता करने की प्रेरणा मुझे सबसे पहले प्रकृति निरीक्षण से मिली है, जिसका श्रेय मेरी जन्मभूमि कूर्मांचल प्रदेश को है। कवि जीवन के पहले भी मुझे याद है, मैं घंटों एकान्त में बैठा प्राकृतिक दृश्यों को एकटक देखा करता था और कोई अज्ञात आकर्षण मेरे भीतर एक अत्यन्त सौंदर्य का जाल बुनकर मेरी चेतना को तन्मय कर देता था। जब कभी मैं आंखें मूंद लेता था तो वह दृश्यपट चुपचाप मेरी आंखों के सामने घूमा करता था।" पन्त ने निस्संदेह काव्य में प्रकृति चित्रण को एक नई पहचान दी है। ऐसा प्रतीत होता है कि पन्त जी की माता के देहान्त के उपरान्त पन्त प्रकृति में ही अपनी मां के स्नेह को देखने लगे। यह भी कहा जा सकता है कि मां ही ने पिता, सखा, शिक्षक, एवं प्रेमिका के रूप में प्रकृति ने पन्त को स्नेह दिया।

पन्त जी के अनुसार — मां से बढ़ कर रही धात्री, तू बचपन में मेरे हित ।
धात्री कथा रूपक भर, तूने किया जनक बन पोषण।
मातृहीन बालक के सिर पर बरद हस्तधर गोपन।[1]

उनके लिए प्राकृतिक सौंदर्य प्राथमिकता था

छोड़ द्रुमों की मधु छाया।
तोड प्रकृति से भी माया।
बाले, तेरे बाल जाल में कैसे उलझा दूं लोचन।
छोड़ अभी से इस जग को ।

पन्त जी का पहला काव्य संग्रह "वीणा" है, जिसमें उन्होने सुंदर प्रकृति चित्रण किया है। उन्हें प्राकृतिक सौन्दर्य के समक्ष नारी सौन्दर्य तुच्छ प्रतीत होता है। "वीणा" में कवि प्रकृति को मेरे जीवन का हार कहकर सम्बोधन करते है। "ग्रंथि" दूसरी रचना है जिसमें प्रकृति के अनके सुन्दर दृश्य है, विरह काव्य होते हुए भी अनेक सुन्दर दृश्य है। "पल्लव" तक आते-आते पंन्त जी का प्रकृति चित्रण उतना आकर्षक नहीं रहा। पन्त का प्रकृति चित्रण निःसन्देह बहुआयामी है। आलम्बन के रुप में प्रकृति का चित्रण व गांव की शोभा का वर्णन पन्त जी इस प्रकार करते है —

फैली खेतों में दूर तलक, मखमल सी कोमल हरियाली।
लिपटी जिसमें रवि की किरणें, चांदी की सी उजली जाली।

'सुमित्रा नंदन पंत के काव्य की विशेषता यह है कि विषय वस्तु की भिन्नता होने पर भी उनमें कल्पना की स्वच्छंद उड़ान, प्रकृति के प्रति आकर्षण और प्रकृति एवं मानव जीवन के कोमल और सरस पक्षों के प्रति अटूट आग्रह है। अपने काव्य में कल्पना के महत्व को बताते हुए सुमित्रा नंदन पंत ने लिखा है

"मैं कल्पना के सत्य को सबसे बड़ा सत्य मानता हूं, मेरी कल्पना को जिन जिन विचारधाराओं से प्रेरणा मिली है, उन सब का समीकरण करने की मैंने चेष्टा की है। मेरा विचार है कि " वीणा " से लेकर " ग्राम्या तक अपनी सभी रचनाओं में मैंने अपनी कल्पना को ही वाणी दी है। उषा, संध्या, फूल, कपोल, कलरव, ओस के वन और नदी निर्झर उनके एकांकी किशोर मन को सदैव अपनी ओर आकर्षित करते रहते हैं। पंत के काव्य में प्रकृति के प्रति अगाध प्रेम व कल्पना की ऊँची उड़ान है, पन्त के यहां प्रकृति निर्जीव जड़ वस्तु होकर साकार व सजीव सत्ता के रुप में प्रकट होती है। उसका एक-एक अणु प्रत्येक उपकरण कभी मन में जिज्ञासा उत्पन्न करते है तो कभी संध्या, प्रातः वर्षा, वसंत, नदी, निर्झर, भ्रमर, तितली, पक्षी आदि सभी उसके मन को और आंदोलित करते हैं। संध्या के द्रश्य को इंगित करते है—

कौन तुम रूपसी कौन,

व्योम से उतर रही चुपचाप,
छिपी निज माया में छवि आप,
सुनहला फैला केश कलाप,
मंत्र मधुर मृदु मौन।

इस पूरी कविता में संध्या को एक आकर्षक युवती के रूप में मौन मंथर गति से पृथ्वी पर पदार्पण करते हुए दिखा कर कवि ने संध्या का मानवीकरण किया है।

पन्त जी प्रकृति के उद्दीपन रुप का चित्रण करते समय स्वतंत्र सत्ता के रुप में नहीं, बल्कि प्रकृति को अपनी भावनाओं के अनुरुप देखते है। प्रकृति उनके काव्य में मानव की सुख और दुखात्मक अनुभूतियों को उद्दीप्त करती हुई दिखाई देती है। वह चित्रित करते है—

वन के विटपों की डालडाल, कोमल कलियों से लाललाल।
फैली नव मधु की रुप ज्वाल, जल-जल प्राणों की अलि उन्मन।[2]

कविकर पन्त ने कविता में अलंकारों का खुलकर प्रयोग किया है, कविता में चमत्कार पैदा करने के लिए विविध उपकरणों का उपमानों के रुप में प्रयोग किया है। उदाहरण दृष्टव्य है।

इन्दु की छवि में, तिमिर के गर्भ में, अनिल की ध्वनि में, सलिल की वीचि में,
एक उत्सुकता विचरती थी, सरल सुमन की स्मिति में, लता के अधर में।
निज पलक, मेरी विकलता, साथ ही अवनिसे, उर से मृगाक्षी ने उठा
एक पल, निज स्नेह श्यामल दृष्टि से स्निग्ध कर दी दृष्टि मेरी दीप-सी।।[3]

इसी प्रकार "परिवर्तन" में सांगरुपक देखते वनता है।

"अहे वासुकि सहस्त्र फन, लक्ष अलक्षित चरण तुम्हारे चिन्ह निरन्तर,
छोड़ रहें हैं जग के विक्षत वक्ष-स्थल पर,
शतशत फेनोच्छ्वसित स्फीत फूत्कार भयंकर,
घुमा रहे हैं घनाकार जगती का अम्बर,
मृत्यु तुम्हारा गरल दन्त, कुंचक-कल्पान्तर,
अखिल विश्व की विवर,वक कुण्डल दिग्मण्डल।[4]

इसी प्रकार — तुम नृशंस नृप से जगती पर चढ़ अनियन्त्रित,
करते हो संसृति को उत्पीड़ित पद-मर्दित।

नग्न नगर कर, भग्न भवन, प्रतिमाएँ खण्डित,
हर लेते हो विभव कला-कौशल चिर संचित ।। (परिवर्तन)

पंत प्रकृति के कौमल और कठोर दोनों रुपों का चित्रण करते है, साथ ही विविध रसों का सुन्दर परिपाक देखने को मिलता है—

हाय रुक गया यहीं संसार,
बना सिंदूर अंगार।
वातहत लतिका वह सुकुमार,
पड़ी है छिन्नाधार ॥

इस प्रकार प्रकृति संवेदनात्मक रुप में दृष्टिगोचर होती है, एक ओर प्रकृति मानव के अन्दर आनन्द तथा उल्लास में भाग लेती दिखाई देती है। तो दूसरी ओर मानव के शोक विषाद, रुदन, अवसाद के क्षणों में आंसू बहाती हुई दिखाई देती है।

अचिरता देख जगत् की आप
शून्य भरता समीर निःश्वास,
डालता पातों पर चुपचाप
ओस के आंसू लाकाश,
सिसक उठता समुद्र का मन,
सिहर उठते उडुगन।

पन्त असीम सत्ता को स्वीकार करते है जो समस्त विश्व का संचालन करती है।

एक छवि के असंख्य उडुगन,
एक ही सब नें स्पन्दन।

कवि पन्त ने इसी तरह 'मौन निमन्त्रण' और, 'नौकाविहार' में इसके प्रत्यक्ष उदाहरण मिलते हैं। एक उदाहरण इसे स्पष्ट कर देगा—

कनक छाया में, जब कि सकाल, खोलती कलिका उर के द्वार,
सुरभि पीडित मधुपों के बाल, तडप बन जाते हैं गुंजार,
न जाने ढुलक ओस में कौन, खींच लेता मेरे दृग मौन।[5]

पन्त ने प्रकृति में चेतन सत्ता का आरोपण भी बहुत सुन्दर रूप में चित्रित किया है —

"कहो तुम रूपसी कौन"

पंत के काव्य में प्रकृति विविधता के साथ दृष्टिगोचर होती है। उन्होनें प्रकृति को नारी रुप में, दूती रुप में, प्रतीक रूप में, उपदेशिका रुप में बहुत ही मनोरम दृश्य प्रस्तुत किये हैं। प्रकृति को देश और काल की सीमाओं में आवद्ध नहीं किया जा सकता, अंग्रेजी कवियों पर भी प्रकृति का प्रभाव दिखाई देता है। हिन्दी साहित्य ने समय समय पर अनेकानेक महान विभूतियों को जन्म दिया जिनके पदचाप, पैरो की आहट आज भी स्पष्पट सुनाई है। कवि ने सरल, सुगम एवं सुवोध शब्दों में उपरोक्त सार गर्मित तथ्य की अभिव्यंगना अन्यत भी किया है।

" The world is too much with us Getting and spending, we lay waste our power little we see nature that is owrs we have taker our be arts away asordid book. [6]

प्रकृति के प्रति अपने उदगार को व्डर्सवर्थ ने पुनः व्यक्त किया है—

To me the meanest flower that blows given me thought that too often lie to dear for tears.[7]

आचार्य राम चन्द्र शुक्ल की आलोचनात्मक रचना का महत्व इस बात से और भी बढ जाता है उनका पर्यावरण बोध/प्रकृति प्रेम देश प्रेम से जुड़ा हुआ है—

"देश प्रेम है क्या ? प्रेम ही तो है। इस प्रेम का आलम्बन क्या है? प्रेम ही तो है। इस प्रेम का आलम्बन क्या है? सारा देश अर्थात मनुष्य , पुशु पक्षी, नदी नाले, वन, पर्वत सहित सारी भूमि। प्रेम किस प्रकार का है? यह साहचर्य प्रेम है। जिनके बीच हम रहते है, जिनकी बाते बार बार सुनते रहते हैं जिनका हमारा हर घड़ी का साथ होता है। सारांश यह है जिनके साहित्य का हमें अभ्यास पड़ सकता है, जिनके रागात्मक संस्कार मानव अंतः करण में दीर्घ परम्परा के कारण मूल रुप से बद्ध है अतः इनके द्वारा जैसे पका रस परिपाक संभव है, वैसा कल कारखाने, गोदाम स्टेशन, इंजिन हवाईजहाज, इत्यादि द्वारा नहीं. ।[8]

उक्त विषय पर डा० नामवर सिंह की सोच रामचंनद्र शुक्ल से मिलती जुलती सी मालूम पड़ती है। " राष्ट्रीय जागरण के युग की अनेक कविताओं और कहानियों में दिखाया गया है। कि देश प्रेम की भावना प्रकृति प्रेम से पैदा हुई है। फिर उसके परिणाम स्वरुप भावुक ह्रदय देश तथा देशोवार के लिए प्रवृत्त हुए।[9]

पन्त को प्रकृति का सुंदर रुप अत्यधिक आकर्षक लगा उसी का काव्य में उपयोग भी किया है। प्रकृति का सुन्दर रूप ग्रहण करने के कारण ही पन्त जी में चिंतन शक्ति आई और वे हिन्दी साहित्य को स्वर्ण काव्य प्रदान करने में सफल हो सके। इस तरह पन्त जी को प्रकृति का चितेरा कहना अक्षरशः उचित है। ये प्रकृति के अनन्य भक्त हैं। उनकी कविता में प्रकृति के विविध रूप एवं प्रयोग उन्हें सर्वश्रेष्ठ कवि प्रमाणित करते हैं इस में सन्देह नहीं।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः-

1. डॉ० रामविलास शर्मा — हिन्दी के छायावदी कवि पृष्ठ 56।
2. सुमित्रानन्दन पंत 'गुंजन'।
3. सुमित्रानन्दन पंत 'ग्रंथि'।
4. सुमित्रानन्दन पंत 'परिवर्तन'।
5. सुमित्रानन्दन पंत 'निमंत्रण'
6. Palgrave Golden Treasure, Palgrave Momillan, London, 2008 P.19
7. P2.5
8. आचार्य राम चन्द्र शुक्ल, ग्रंथावली, भाग-3 नई दिल्ली, 2007 पृ० 107
9. डॉ नामवर सिंह, 'छायावाद, पुनमद्रण, दिल्ली-1995 पृ० 35

REFERENCES

1. Dr Ramvilas Sharma, Hindi ke Chhayawadi Kavi, pg 561
2. Sumitranandan Pant 'Gunjan'
3. Sumitranandan Pant 'Granthi'
4. Sumitranandan Pant 'Parivartan'
5. Sumitranandan Pant 'Nimantran'
6. Palgrave Golden Treasure, Palgrave Momillan, London, 2008 P.19
7. P2.5
8. Acharya Ram Chandra Shukla, Grantahwali, Part-3, New Delhi, 2007, pg 107
9. Dr Namwar Singh, Chhayavaad, Reprint, Delhi-1995, pg 35